OPEN ACCESS

Volume: 3

Issue: 4

Month: October

Year: 2024

ISSN: 2583-7117

Published:25.10.2024

Citation:

डॉ उषा वैद्य, रंजना पटेल, उच्च शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर ऑनलाइन शिक्षा के प्रभाव का कोविड-19 वैश्विक महामारी के परिपेक्ष्य में समाजशास्त्रीय अध्ययन "कटनी जिले के विशेष संदर्भ में" International Journal of Innovations In Science Engineering And Management, vol. 3, no. 4, 2024, pp. 10–20.

DOI
10.69968/ijisem.2024v3i410-20

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Share Alike 4.0 International License

उच्च शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर ऑनलाइन शिक्षा के प्रभाव का कोविड-19 वैश्विक महामारी के परिपेक्ष्य में समाजशास्त्रीय अध्ययन "कटनी जिले के विशेष संदर्भ में"

डॉ उषा वैद्य [1] **रंजना पटेल** [2]

[1]प्राध्यापक समाजशास्त्र शोध निर्देशक रबीन्द्रनाथ टैगोर यूनिवर्सिटी
[2] शोधार्थी समाजशास्त्र रबीन्द्रनाथ टैगोर यूनिवर्सिटी रायसेन, म. प्र.

सारांश

इस अध्ययन का उद्देश्य मध्य प्रदेश के कटनी में कोविड-19 की स्थिति के दौरान ऑनलाइन शिक्षण सीखने के प्रति छात्रों के दृष्टिकोण के साथ-साथ उनके सामने आने वाली समस्या के बारे में पूछताछ करना था। अध्ययन ने अनुसंधान की वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि को लागू किया। यह शोध मध्य प्रदेश के कटनी के छात्रों के बीच किया गया था। शोध के परिणामों से पता चलता है कि छात्रों के उच्चतम प्रतिशत ऑनलाइन सीखने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं। हालांकि कोविड-19 के प्रकोप के कारण लॉकडाउन के समय ऑनलाइन लर्निंग सीखने का सबसे अच्छा तरीका है और लॉकडाउन अवधि के दौरान ऑनलाइन सीखने के प्रभाव पर आगे गहन सांख्यिकीय अध्ययन किया जा सकता है। शोध का उद्देश्य उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों पर ऑनलाइन शिक्षा के समग्र प्रभाव का पता लगाना भी था। चयनित चर व्यक्तिगत विकास, सीखने, दृष्टिकोण और छात्रों (उत्तरदाताओं) की जागरूकता थे। यह पाया गया कि ऑनलाइन सीखने का इन सभी चार चर पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह विश्लेषण आईबीएम एसपीएसएस की मदद से किया गया। इस शोध के लिए चार परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया था। इसके अलावा, सर्वेक्षण करने के लिए 29 प्रश्नों की एक प्रश्नावली तैयार की गई थी।

1. परिचय

शिक्षा, अनुशासन जो समाजीकरण के विभिन्न औपचारिक और अनौपचारिक साधनों (जैसे, ग्रामीण विकास परियोजनाओं और माता-पिता-बच्चे के संबंधों के माध्यम से शिक्षा) के विपरीत स्कूलों या स्कूल जैसे वातावरण में शिक्षण और सीखने के तरीकों से संबंधित है।

1.1 भारतीय शिक्षा प्रणाली

भारत में ब्रिटिश शासन से पहले और बाद के शासन से लेकर आज तक शिक्षा प्रणाली में एक बड़ा बदलाव देखा जा सकता है। प्रारंभ में, बच्चों को गुरुकुलों में शिक्षित किया गया था जिसे बाद में संशोधित किया गया था और आधुनिक शिक्षा प्रणाली शुरू की गई थी।

भारत के स्वतंत्र होने के बाद, संविधान ने छह मौलिक अधिकारों को प्रतिबद्ध किया, जिनमें से एक शिक्षा का अधिकार था। इसने 6 से 14 वर्ष की आयु के बीच के प्रत्येक बच्चे के लिए मुफ्त शिक्षा की अनुमति दी। शिक्षा प्रणाली को मुख्य रूप से पूर्व-प्राथमिक, प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा में विभाजित किया गया है, जिसके बाद उच्च अध्ययन होता है। हालांकि, इस प्रणाली में कई कमियां और खामियां हैं, जिन पर अगर अंकुश लगाया जाए तो यह देश के समग्र विकास के लिए काम कर सकता है। [1]

1.2 उच्च शिक्षा का उद्देश्य

बार्नेट (1992) उच्च शिक्षा (एचई) के उद्देश्य पर सामान्य दृष्टिकोण के रूप में निम्नलिखित का सुझाव देता है:

- **योग्य मानव संसाधनों का उत्पादन:** उच्च शिक्षा को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में माना जा सकता है जिसमें छात्रों को बाजार में अवशोषित होने के लिए "उत्पादों" के रूप में गिना जाता है। इस प्रकार उच्च शिक्षा व्यवसाय और उद्योग की वृद्धि और विकास के लिए महत्वपूर्ण इनपुट बन जाती है।
- **एक शोध कैरियर के लिए प्रशिक्षण:** उच्च शिक्षा योग्य वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं को तैयार करने में योगदान देती है जो गुणवत्ता वाले अनुसंधान प्रकाशनों के उत्पादन में मदद करेगी।
- **सही प्रकार के शिक्षण-अधिगम वातावरण का निर्माण:** एचई के संस्थान शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार करके सही प्रकार के शिक्षण-अधिगम वातावरण के निर्माण और निर्वाह पर ध्यान केंद्रित करते हैं और इस प्रकार छात्रों को बदलते वैश्विक परिदृश्य में चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करने के लिए अध्ययन और अनुप्रयोग के विभिन्न क्षेत्रों में वैश्विक दक्षता प्राप्त करने में सक्षम बनाते हैं।
- **जीवन की संभावनाओं का विस्तार करने के मामले के रूप में उच्च शिक्षा:** उच्च शिक्षा को एक लचीली, सतत शिक्षा मोड के माध्यम से किसी व्यक्ति की विकास प्रक्रिया में भाग लेने के अवसर के रूप में देखा जाता है।

1.3 ऑनलाइन बनाम ऑफ़लाइन शिक्षा

वैश्विक महामारी कोरोनावायरस (जिसे कोविड-19 के रूप में भी जाना जाता है) की शुरुआत के बाद से "न्यू नॉर्मल" सबसे कड़वा वाक्यांश बन गया है। कोरोना वायरस एक घातक संक्रमण है जो पहली बार दिसंबर 2019 में चीन में पाया गया था। समय के साथ यह विश्व स्तर पर फैल गया और एक वैश्विक संकट का रूप ले लिया। कई सालों में पहली बार किसी बीमारी ने पूरी दुनिया को सामान्य रूप से काम करने से रोक दिया था। हर देश ने संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए देशव्यापी लॉकडाउन लगाया, क्योंकि यह अत्यधिक संक्रामक है। तब से, सब कुछ ऑनलाइन हो गया है, कक्षाओं से लेकर कार्यालयों तक, किराने की खरीदारी सब कुछ। जीवन के इस रूप को "न्यू नॉर्मल" कहा जाता है। स्कूल और विश्वविद्यालय कक्षाएं, परीक्षा, प्रस्तुतियां, मौखिक परीक्षा आदि सभी ऑनलाइन आयोजित कर रहे हैं। [2]

ऑनलाइन शिक्षा छात्रों और शिक्षकों की सुविधा के अनुसार ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम से सीख रही है। इसकी तुलना में, *ऑफ़लाइन शिक्षा* पारंपरिक शिक्षण प्रणाली है जहां छात्रों और शिक्षकों को आमने-सामने सीखना पड़ता है। शिक्षा के दोनों रूपों के अपने फायदे और नुकसान हैं।

1.4 वैश्विक महामारी कोविड-19 के पश्चात ऑनलाइन शिक्षा की भूमिका

भारत में शिक्षा क्षेत्र, जो अब तक बदलने में धीमा था, हाल ही में बदलते नौकरी परिदृश्य, तकनीकी व्यवधानों, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की मांग और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के कार्यान्वयन के साथ बड़े पैमाने पर परिवर्तन देख रहा है। महामारी ने लॉकडाउन अवधि के दौरान स्कूलों को बंद करने के लिए मजबूर होने के साथ सिस्टम को और झटका दिया, और छात्रों और शिक्षकों को ऑनलाइन शिक्षण-अधिगम में बदल दिया। भारत में कोविड-19 के कारण लागू लॉकडाउन की शुरुआत में स्कूल बंद होने के कारण करीब 25 करोड़ छात्र प्रभावित हुए थे। महामारी ने सार्वजनिक और निजी स्कूलों में कई चुनौतियां पेश कीं, जिनमें ड्रॉपआउट में अपेक्षित वृद्धि, सीखने के नुकसान और डिजिटल विभाजन में वृद्धि शामिल थी। महामारी ने इस तरह के संकट को दूर करने और निजी स्कूलों की स्थिरता के लिए शिक्षकों सहित सिस्टम की तत्परता पर भी सवाल उठाया। हालांकि, कोविड-19 ने स्कूली शिक्षा में डिजिटल अपनाने के लिए उत्प्रेरक के रूप में भी काम किया। कई राज्यों में स्कूलों के फिर से खुलने के साथ, यह महत्वपूर्ण है कि 15 महीने से अधिक समय तक घर-आधारित शिक्षा के बाद बच्चों को स्कूल वापस लाने के लिए एक सावधानीपूर्वक रणनीति बनाई जाए। इस बदलाव में पिछले वर्ष की तुलना में हुए सीखने के नुकसान पर विचार करना होगा और साथ ही एक लचीली प्रणाली बनाने के लिए एक भविष्यवादी दृष्टिकोण अपनाना होगा जो भविष्य के किसी भी झटके का सामना कर सके। एनईपी 2020, और उसके बाद नेशनल डिजिटल एजुकेशन आर्किटेक्चर (एनडीईएआर) और नेशनल इनिशिएटिव फॉर प्रोफिशिएंसी इन रीडिंग विद अंडरस्टैंडिंग एंड न्यूमेरेसी (निपुण

भारत) जैसी सरकारी पहलों से इस परिवर्तन के लिए एक ब्लूप्रिंट प्रदान करने की उम्मीद है। यह पेपर सीआईआई स्कूल समिट 2021 की परिणति है, जिसने नीति निर्माताओं, उद्योग प्रमुखों और सेवा प्रदाताओं को महामारी के बाद स्कूलों के लिए रिकवरी की राह पर विचार-विमर्श करने के लिए एक मंच पर एक साथ लाया। यह पांच विषयों में महामारी के प्रभाव का विश्लेषण करता है और चुनौतियों का समाधान करने के लिए सरकारों और नागरिक समाज संगठनों द्वारा की गई विभिन्न पहलों को मैप करता है: [3]

1. महामारी के दौरान और बाद में पढ़ाई बीच में छोड़ने वालों की संख्या में कमी लाना।
2. सीखने के परिणामों और कल्याण में गिरावट।
3. डिजिटल आधारित शिक्षा का एकीकरण।
4. शिक्षकों की भूमिका और क्षमता।
5. निजी स्कूलों की स्थिरता।

1.5 उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों के लिए ऑनलाइन शिक्षा

इस डिजिटल युग में, शिक्षा क्षेत्र बड़े पैमाने पर परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। दुनिया भर के छात्र और विश्वविद्यालय अब सीखने के पुराने, एक-आयामी, चाक और बोर्ड के तरीकों पर भरोसा नहीं कर रहे हैं। इसके बजाय, उन्होंने **उच्च शिक्षा में ई-लर्निंग** लाने जैसी पूरी सीखने की प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने, सरल बनाने और प्रासंगिक बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के ऑनलाइन टूल को अपनाना शुरू कर दिया है।

नतीजतन, वैश्विक ई-लर्निंग बाजार में जबरदस्त वृद्धि देखी जाने लगी है। इतना ही नहीं, ई-लर्निंग से प्राप्त राजस्व 2025 तक लगभग $ 325 बिलियन के जादुई आंकड़े को छूने की उम्मीद है।

ऐसे समय में, जहां शिक्षार्थियों को दैनिक आधार पर जानकारी के विशाल धन से जूझना पड़ता है, कोशिश और परीक्षण की गई, अधिक पारंपरिक पद्धतियों पर उच्च शिक्षा में ई-लर्निंग के महत्व को समझना बेहद महत्वपूर्ण हो जाता है।

यहां अपने पारंपरिक समकक्षों पर उच्च शिक्षा में 10 ई-लर्निंग लाभों की एक सूची दी गई है:

1. अधिक पहुंच: सीमाओं से परे छात्रों के लिए लाभ
2. संसाधन मापनीयता: समय और धन की बचत
3. बेहतर परिणाम: सूचना प्रतिधारण में ई-लर्निंग के लाभ
4. बेहतर गति: त्वरित और प्रभावी शिक्षण किसी भी समय
5. लागत-प्रभावशीलता: ई-लर्निंग बनाम पारंपरिक सीखने पर पैसे बचाएं
6. त्वरित पाठ वितरण: गतिशील और त्वरित सीखने की प्रक्रिया
7. निजीकरण: अनुकूलित पाठ्यक्रम संरचना
8. त्वरित कौशल: अपनी क्षमताओं का विस्तार करने में मदद करता है
9. पर्यावरण की दृष्टि से ध्वनि: परेशानी मुक्त सीखने के अवसर
10. पता लगाने योग्य परिणाम: सीखने की प्रगति को ट्रैक करना आसान

1.6 ऑनलाइन शिक्षा का भविष्य

स्मार्ट कक्षाओं को शुरू किए जाने और उन्हें सफल चिह्नित किए जाने पर बहुत समय नहीं हुआ है। उसी संस्कृति को बढ़ावा देना एक और स्मार्ट क्लास जो पेश किया गया है वह एक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म है। हम सभी इंटरनेट का उपयोग करते हैं और इसके माध्यम से सीखना वास्तव में शिक्षा को दूसरे स्तर पर ले जा सकता है। यह सबसे अच्छे प्लेटफार्मों में से एक है और ई-लर्निंग शिक्षा के नवीनतम माध्यमों में से एक है।

यह दिन-प्रतिदिन लोकप्रिय हो रहा है और आसान और सुविधाजनक माध्यमों में से एक है। हम सभी अपने द्वारा खर्च किए गए पैसे पर सबसे अच्छा चाहते हैं। जब हम अपने दरवाजे पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करते हैं, तो कोई ऑफ़लाइन पाठ्यक्रम क्यों पसंद करेगा।

अध्ययन सामग्री आसानी से ऑनलाइन उपलब्ध है और कोई भी आसानी से अपनी पसंद के किसी भी पाठ्यक्रम तक पहुंच सकता है। ऐसे कई संस्थान हैं जिन्होंने ऑनलाइन कक्षाएं शुरू की हैं और छात्रों को यह अधिक सुविधाजनक लगता है। वे अपने यात्रा के समय को बचाते हैं और आसानी से अपनी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।

2 साहित्य सर्वेक्षण

परम्परागत शिक्षा प्रणाली में शिक्षा देने वाले अर्थात शिक्षक तथा शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र के बीच सम्बन्ध होता है। इस प्रक्रिया में अध्यापक अपने सम्मुख बैठे छात्रों को शिक्षा प्रदान करता है। परन्तु इस स्थिति दूसरे से अलग रहते है। शिक्षक विविध प्रकार के सम प्रेषण माध्यमों से छात्रों तक ज्ञान पहुँचाता हैं। दूरस्थ शिक्षा अनौपचारिक शिक्षा की आधुनिक प्रणाली है। यह पत्राचार कोशों, सम्पर्क कार्यक्रमों, जन संचार के साधनों आदि के द्वारा शिक्षा प्रदान की जाती है। दूरस्थ शिक्षा में प्रचार, गृह-अध्ययन, मुक्त शिक्षण, परिसर युक्त अध्ययन आदि निहित है। इसी के कारण दूरस्थ शिक्षा के लिए दूरस्थ अधिगम, विद्यालय के बाहर शिक्षा आदि संज्ञाएँ

प्रयुक्त की जाती हैं। दूरस्थ शिक्षा मानवीय, समाज, तत् कालीन, भविष्य व वर्तमान से सम्बन्धित है। दूरस्थ शिक्षा के द्वारा 'शिक्षा सभी तक पहुँचें' की धारणा हमारे समक्ष आती है अर्थात् समाज के सभी स्तर तक शिक्षा प्राप्त हो। इसलिए दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में निःसन्देह एक अच्छा संगठन तथा संरचना की आवश्यकता होती है। संचार की विविध साधनों की सहायता से दूरस्थ शिक्षा प्रणाली अध्यापक तथा छात्रों के बीच की दूरी को मिटाती है। [4]

इंटरनेट, मोबाइल फोन, मोबाइल एप्लिकेशन, टैबलेट, लैपटॉप और अन्य आधुनिक उपकरणों के विकास के कारण आज की दुनिया की अधिक से अधिक चीजें डिजिटल हो रही हैं। भारत के महानगरों और अन्य शहरों की शिक्षा प्रणाली भी काफी हद तक आधुनिकीकृत हो गई है, जिससे डिजीटलीकरण के लिए रास्ता बन गया है। डिजिटल शिक्षा कई अंतर्राष्ट्रीय स्कूलों के साथ-साथ भारत की पारंपरिक शिक्षा प्रणाली में अपनी जगह बना रही है और पारंपरिक कक्ष प्रशिक्षण का स्थान ले रही है। जिसके कारण आधुनिक युग में अधिगम और सरलीकृत हो गया है साथ ही विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि में भी वृद्धि हुई है। विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि ज्ञात करने के लिए निदानात्मक परीक्षण किया जाता मूल्यांकन के पश्चात् प्राप्त परिणामों के आधार पर निम्न श्रेणी प्राप्त विद्यार्थियों को अतिरिक्त कक्षाओं में अध्यापन कार्य कराया जाता है जिसके कारण शैक्षणिक उपलब्धि में भी परिवर्तन हुआ है। [5]

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने ११ मार्च, २०२० को कोरोना वायरस रोग २०१६ (COVID-19) को एक महामारी और सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल घोषित किया। वैश्विक स्तर पर, २२ दिसंबर २०२१ तक, लगभग २७५ मिलियन मामले और ५.४ मिलियन मौतें हुई हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से हमने जिस सबसे चुनौती पूर्ण संकट का सामना किया है, वह COVID-19 महामारी वैश्विक सार्वजनिक स्वास्थ्य और अर्थव्यवस्थाओं को प्रभावित कर रही है, बदले में, भी क्षेत्रों में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन की ओर ले जाती है। यह सर्वविदित है कि प्रकोप के साथ आने वाली कई नोवैज्ञानिक समस्याएं कम उम्र से जुड़ी होती हैं और इन अवधियों के बाद भी लंबे समय तक बनी रह सकती हैं। नीजतन, स्कूल स्तर और विश्वविद्यालय स्तर के छात्रों ने COVID-19 महामारी के कारण तनाव, अवसाद या चिंता, और नींद की समस्याओं जैसे मनोवैज्ञानिक संकट का अनुभव किया है। इस आबादी में मनोवैज्ञानिक समस्याओं का मूल्यांकन और प्रबंधन छात्र-केंद्रित समर्थन प्रणाली के प्रमुख तत्व होने चाहिए। [6]

किसी भी शोधकार्य का कार्य तब तक अपनी सार्थकता नहीं बताता जब तक कि शोध की कोई उपयोगिता न हो। प्रत्येक शोध अपने अन्दर कुछ न कुछ शैक्षिक निहितार्थ अवश्य रखता है। शोधकर्त्री द्वारा किया गया शोध सर्वेक्षणात्मक है जो कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता एवं समायोजन का शैक्षिक निष्पत्ति पर कैसे और क्या प्रभाव पड़ता है का अध्ययन करना है। यह शोध विद्यार्थियों की छात्र छात्राएँ सामाजिक रूप से कितने परिपक्व होते हैं और वह समाज व विश्वास में कितना समायोजन कर पाते हैं और उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर इनका कितना प्रभाव पड़ता है। [7]

वैश्विक महामारी कोरोना ने जहाँ सम्पूर्ण विश्व को धरातल पर लाकर रख दिया था। उस समय मनुष्य जीवन में कई संकट उत्पन्न हो गये थें। उनमें से एक बड़ा क्षेत्र जो प्रभावित हुआ था वह था शिक्षा। लॉकडाउन की स्थिति में शिक्षण, मूल्यांकन आदि सभी कार्य पूर्णरूपेण बंद हो गये थे। बदलते जीवन के आयाम को ध्यान में रखकर उच्च शिक्षा के स्वरूप में भी क्रांतिकारी परिवर्तन आये फलस्वरूप ऑनलाइन शिक्षा एवं डिजिटल युग का प्रारम्भ हुआ। जहाँ उचित शारीरिक दूरी बनाये रखने के साथ विधार्थी एवं शिक्षक के बीच शिक्षा को लेकर संवाद स्थापित हो पाया। [8]

2.1 शोध के उद्देश्य

1. उच्च शिक्षा में ऑनलाइन शिक्षा के प्रति छात्रों के व्यवहार और दृष्टिकोण का अध्ययन।
2. उच्च शिक्षा में अध्ययन करने वाले छात्रों के व्यक्तिगत विकास पर ऑनलाइन शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन।
3. उच्च शिक्षा में अध्ययन करने वाले छात्रों के सीखने पर ऑनलाइन शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन।
4. उच्च शिक्षा में अध्ययन करने वाले छात्रों की जागरूकता पर ऑनलाइन शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन।
5. उच्च शिक्षा में अध्ययन करने वाले छात्रों के दृष्टिकोण विकास पर ऑनलाइन शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन।

2.2 शोध की परिकल्पना

इस शोध की परिकल्पनाएं निम्नलिखित हैं:

H1: उच्च शिक्षा में पढ़ रहे छात्र-छात्राओं के व्यक्तिगत विकास पर ऑनलाइन शिक्षा का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

H2: उच्च शिक्षा में पढ़ रहे छात्र-छात्राओं के सीखने पर ऑनलाइन शिक्षा का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

H3: उच्च शिक्षा में पढ़ रहे छात्र-छात्राओं की जागरूकता पर ऑनलाइन शिक्षा का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

H4: उच्च शिक्षा में पढ़ रहे छात्र-छात्राओं के दृष्टिकोण पर ऑनलाइन शिक्षा का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

H5: ऑनलाइन शिक्षा एवं तकनीकी सुविधाओं के मध्य सकारात्मक संबंध होता है |

3 अध्ययन विधि

- **अनुसंधान डिजाइन:** क्रॉस-अनुभागीय सर्वेक्षण डिजाइन।
- **परिकल्पना:** ऑनलाइन शिक्षा के प्रभाव के विशिष्ट पहलुओं का पता लगाने के लिए तैयार की गई पांच परिकल्पनाएं।
- **जनसंख्या और नमूनाकरण:** लक्षित जनसंख्या: कटनी जिले में उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र।
- **नमूनाकरण तकनीक:** नमूना एक व्यवस्थित यादृच्छिक नमूना विधि का उपयोग करके चुना जाता है।
- **डेटा संग्रह उपकरण:** उपकरण: संरचित प्रश्नावली।
- **सामग्री:** ऑनलाइन शिक्षा, धारणाओं, चुनौतियों और वरीयताओं के सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव पर डेटा एकत्र करने के लिए डिज़ाइन किए गए प्रश्न।
- **डेटा संग्रह प्रक्रिया: i)** शैक्षिक संस्थानों और ऑनलाइन प्लेटफार्मों सहित विभिन्न चैनलों के माध्यम से प्रश्नावली का वितरण। **ii)** गोपनीयता और स्वैच्छिक भागीदारी का आश्वासन।
- **नमूने का आकार:** सर्वेक्षण में कुल 458 उत्तरदाताओं ने भाग लिया।
- **डेटा विश्लेषण:** तैयार परिकल्पनाओं का परीक्षण करने के लिए उपयुक्त तरीकों का उपयोग करते हुए सांख्यिकीय विश्लेषण। तकनीकों में वर्णनात्मक आँकड़े, अनुमानित आँकड़े और संभावित प्रतिगमन विश्लेषण शामिल हो सकते हैं।
- **नैतिक विचार:** प्रतिभागियों से प्राप्त सूचित सहमति। डेटा गोपनीयता और गोपनीयता का आश्वासन।

3.1 आँकड़ा विश्लेषण और व्याख्या

तालिका 1: आयु समूह

आयु समूह		आवृत्ति	प्रतिशत	मान्य प्रतिशत	संचयी प्रतिशत
Valid	17-20 वर्ष	201	43.9	43.9	43.9
	21-24 वर्ष	130	28.4	28.4	72.3
	25-28 वर्ष	115	25.1	25.1	97.4
	29-32 वर्ष	12	2.6	2.6	100.0
	Total	458	100.0	100.0	

यह उपर्युक्त तालिका में प्रदर्शित किया गया है कि 458 (43.9%) उत्तरदाताओं में से 201 (28.4%) उत्तरदाता 17-20 वर्ष के आयु वर्ग के भीतर हैं, 130 (25.1%) उत्तरदाता 21-24 वर्ष के आयु वर्ग के भीतर हैं, 115 उत्तरदाता 25-28 वर्ष के आयु वर्ग के भीतर हैं और 12 (2.6%) उत्तरदाता 29-32 वर्ष के आयु वर्ग के भीतर हैं।

तालिका 2: लैंगिक स्थिति

लिंग		आवृत्ति	प्रतिशत	मान्य प्रतिशत	संचयी प्रतिशत
Valid	पुरुष	315	68.8	68.8	68.8
	महिला	143	31.2	31.2	100.0
	Total	458	100.0	100.0	

यह उपर्युक्त तालिका में प्रदर्शित किया गया है कि 458 उत्तरदाताओं में से 315 (68.8%) पुरुष हैं और 143 (31.2%) महिलाएं हैं

तालिका 3: शैक्षिक डिग्री में अध्ययनरत

शैक्षिक डिग्री में अध्ययनरत					
		आवृत्ति	प्रतिशत	मान्य प्रतिशत	संचयी प्रतिशत
Valid	स्नातक स्तर (तकनीकी)	71	15.5	15.5	15.5
	स्नातक स्तर (गैर तकनीकी)	252	55.0	55.0	70.5
	स्नातकोत्तर	126	27.5	27.5	98.0
	पीएचडी	9	2.0	2.0	100.0
	Total	458	100.0	100.0	

उत्तरदाताओं द्वारा की जा रही शिक्षा के आधार पर, यह व्याख्या की जाती है कि 71 (15.5%) स्नातक स्तर (तकनीकी) की डिग्री में हैं, 252 (55%) छात्र स्नातक स्तर (गैर तकनीकी) की डिग्री में हैं, 126 (27.5%) उत्तरदाता स्नातकोत्तर में हैं, और 9 (2%) उत्तरदाता अपनी पीएचडी कर रहे हैं

तालिका 4: विश्वविद्यालय के प्रकार

विश्वविद्यालय के प्रकार					
		आवृत्ति	प्रतिशत	मान्य प्रतिशत	संचयी प्रतिशत
Valid	सरकारी	140	30.6	30.6	30.6
	निजी	318	69.4	69.4	100.0
	Total	458	100.0	100.0	

जैसा कि उपरोक्त तालिका में उल्लेख किया गया है, 140 (30.6%) उत्तरदाता सरकारी विश्वविद्यालय से हैं और शेष 318 (69.4%) निजी विश्वविद्यालय से हैं।

तालिका 5: वैवाहिक स्थिति

वैवाहिक स्थिति					
		आवृत्ति	प्रतिशत	मान्य प्रतिशत	संचयी प्रतिशत
Valid	विवाहित	48	10.5	10.5	10.5
	अविवाहित	410	89.5	89.5	100.0
	Total	458	100.0	100.0	

उपरोक्त तालिका में प्रदर्शित आंकड़ों के आधार पर, यह व्याख्या की जाती है कि इस अध्ययन में 48 (10.5%) अविवाहित और 410 (89.5%) विवाहित उत्तरदाता हैं।

तालिका 6: परिवार के सदस्यों की संख्या

परिवार के सदस्यों की संख्या					
		आवृत्ति	प्रतिशत	मान्य प्रतिशत	संचयी प्रतिशत
Valid	1-2	59	12.9	12.9	12.9
	3-5	205	44.8	44.8	57.6
	5 से अधिक	194	42.4	42.4	100.0
	Total	458	100.0	100.0	

उपरोक्त तालिका में प्रदर्शित आंकड़ों के आधार पर, यह व्याख्या की गई है कि 59 (12.9%) उत्तरदाताओं के परिवार में 1-2 सदस्य हैं, 205 (42.4%) उत्तरदाताओं के परिवार में 3-5 सदस्य हैं और 194 (44.8%) उत्तरदाताओं के परिवार में 5 से अधिक सदस्य हैं।

तालिका 7: घर का प्रकार

घर का प्रकार		आवृत्ति	प्रतिशत	मान्य प्रतिशत	संचयी प्रतिशत
Valid	कच्चा	7	1.5	1.5	1.5
	पक्का	408	89.1	89.1	90.6
	अर्द्धपक्का	43	9.4	9.4	100.0
	Total	458	100.0	100.0	

उपरोक्त तालिका में प्रदर्शित आंकड़ों के आधार पर, यह व्याख्या की गई है कि 7 (1.5%) उत्तरदाताओं के पास कच्चा घर था, 408 (89.1%) उत्तरदाताओं के पास पक्का घर है, और 43 (9.4%) उत्तरदाताओं के पास अर्द्धपक्का घर है।

तालिका 8: निवास का रूप

निवास का रूप		आवृत्ति	प्रतिशत	मान्य प्रतिशत	संचयी प्रतिशत
Valid	कराया का	283	61.8	61.8	61.8
	स्वयं का	175	38.2	38.2	100.0
	Total	458	100.0	100.0	

उपरोक्त तालिका में प्रदर्शित आंकड़ों के आधार पर, यह व्याख्या की गई है कि 283 (61.8%) उत्तरदाता किराए के घर में रहते हैं जबकि 175 (38.2%) उत्तरदाताओं के पास अपना घर है।

इलाके का प्रकार		आवृत्ति	प्रतिशत	मान्य प्रतिशत	संचयी प्रतिशत
Valid	ग्रामीण	72	15.7	15.7	15.7
	शहरी	170	37.1	37.1	52.8
	अर्द्ध शहरी	208	45.4	45.4	98.3
	अन्य	8	1.7	1.7	100.0
	Total	458	100.0	100.0	

उपरोक्त तालिका में प्रदर्शित आंकड़ों के आधार पर, यह व्याख्या की जाती है कि 72 (15.7%) उत्तरदाता ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं, 170 (37.1%) उत्तरदाता शहरी क्षेत्रों में रहते हैं 208 (45.4%) उत्तरदाता अर्ध-शहरी क्षेत्रों में रहते हैं और 8 (1.7%) उत्तरदाता अन्य क्षेत्रों में रहते हैं।

तालिका 9: इलाके का प्रकार

	दृढ़ता से सहमत	सहमत	तटस्थ	असहमत	दृढ़ता से असहमत
ऑनलाइन शिक्षा, छात्र-छात्राओं को अग्रिम पाठ्यक्रम लेने के लिए अत्यधिक प्रेरित करती है	229	98	7	51	73
ऑनलाइन शिक्षण का उपयोग सीखने को रोचक बनाता है	229	86	56	5	82
धीमा कंप्यूटर और खराब इंटरनेट कनेक्शन ऑनलाइन सीखने के उपयोग को हतोत्साहित करते हैं	201	42	93	39	83
ऑनलाइन शिक्षा ने महामारी के दौरान शिक्षा प्रणाली के पतन को रोका	86	127	73	161	11
ऑनलाइन शिक्षा ने छात्रों को अपने शिक्षा को जारी रखने में मदद की है	194	80	169	15	0
ऑनलाइन शिक्षा हमारी बढ़ती दुनिया का एक सर्वव्यापी हिस्सा बन गई है	54	72	149	77	106
ई-लर्निंग ने प्रभावित किया है कि लोग सीखने और शिक्षण प्रक्रिया को कैसे देखते हैं	196	129	67	21	45

ऑनलाइन शिक्षा छात्रों की धारणा को बढ़ाती है और छात्र स्वतंत्रता की भावना पैदा करती है	287	51	56	64	0
ऑनलाइन सीखने के साथ, छात्र एक ही समय में कई कौशल विकसित करने में सक्षम हैं	249	94	51	18	46
ऑनलाइन शिक्षण ने छात्रों को शिक्षा और सीखने के लिए सभी प्रकार की पहुंच प्रदान की	167	126	60	15	90
ऑनलाइन शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्रों के लिए सीखने की सीमा को बढ़ाना था	177	110	83	0	88
कोविड ने दुनिया को ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का तोहफा दिया है जो छात्रों की सीखने की क्षमता को बढ़ाएगा	182	63	138	51	24
ऑनलाइन शिक्षा छात्रों को अवसर प्रदान करती है जहां वे सर्वोत्तम दृष्टिकोण सीखते हैं	143	188	108	0	19
ऑनलाइन शिक्षा अनंत सीखने के तरीकों और दृष्टिकोणों के साथ एक प्रणाली है	173	181	65	14	25
एक मजबूत शिक्षण दृष्टिकोण बनाने के लिए ऑनलाइन शिक्षा को ऑफ़लाइन शिक्षा के साथ जोड़ा जाना चाहिए	123	93	88	68	86
ऑनलाइन सीखने के प्रति छात्र का दृष्टिकोण ऑनलाइन सीखने के माहौल में एक महत्वपूर्ण कारक है	117	111	94	13	123
ऑनलाइन सीखने से अक्सर बचा जाता है क्योंकि यह सामाजिक अलगाव को बढ़ावा देता है	204	96	95	23	40
ऑनलाइन शिक्षा ने सीखने के नए दृष्टिकोण के प्रति छात्रों के दृष्टिकोण को बदल दिया है	223	108	57	44	26
सीखने में आईसीटी कार्यान्वयन ने शिक्षा में काफी सुधार देखा है	213	104	36	66	39
मिश्रित शिक्षा को एक वैकल्पिक दृष्टिकोण के रूप में अपनाया गया है	176	80	87	15	100
छात्र अब शिक्षा में आईसीटी के उपयोग के बारे में जागरूक हैं	151	82	118	36	71
उचित मार्गदर्शन से परिचित हुए बिना ऑनलाइन शिक्षण को समझना कठिन है	143	119	92	54	50
कम से कम आमने-सामने बातचीत के कारण ऑनलाइन सीखने का पक्ष लेना मुश्किल है	192	118	73	47	28
शिक्षा में उपयुक्त आईसीटी की योजना और विकास लाभकारी महत्व के लिए आवश्यक और मूल्यवान है	198	98	80	45	37
मिश्रित अधिगम वातावरण में सफलता विद्यार्थी की स्व-तैयारी और प्रेरणा पर निर्भर करती है	164	123	73	33	65
ऑनलाइन शिक्षा ने छात्रों को एक-दूसरे से अलग-थलग कर दिया है।	172	88	76	45	77
ऑनलाइन शिक्षा ने छात्रों को छात्रों और शिक्षकों के संबंध से वंचित कर दिया है।	189	108	70	30	61
ऑनलाइन शिक्षा ने पारंपरिक शिक्षा के सामाजिक लाभों को कम कर दिया है।	197	83	88	47	43
ऑनलाइन शिक्षा ने छात्रों के लिए एक मानसिक बाधा पैदा कर दी है।	150	103	84	96	25
ऑनलाइन शिक्षा ने छात्रों के लिए सीखने की बाधा विकसित की है।	176	110	109	22	41

3.2 परिकल्पना परीक्षण

परिकल्पना 1:

Ha1: उच्च शिक्षा में पढ़ रहे छात्र-छात्राओं के व्यक्तिगत विकास पर ऑनलाइन शिक्षा का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है

तालिका 10: परिकल्पना 1

ANOVA					
व्यक्तिगत विकास					
	वर्गों का योग	df	माध्य वर्ग	F	Sig.
समूहों के बीच	2457.341	9	273.038	271.174	.000
समूहों के मध्य	451.080	448	1.007		
कुल	2908.421	457			

व्याख्या: यह व्याख्या की जाती है कि उच्च शिक्षा में पढ़ रहे छात्र-छात्राओं के व्यक्तिगत विकास पर ऑनलाइन शिक्षा का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है, क्योंकि, sig. <0.05 है|

परिकल्पना 2:

Ha2: उच्च शिक्षा में पढ़ रहे छात्र-छात्राओं के सीखने पर ऑनलाइन शिक्षा का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है

तालिका 11: परिकल्पना 2

ANOVA					
सीखने					
	वर्गोंका योग	df	माध्य वर्ग	F	Sig.
समूहों के बीच	2595.636	9	288.404	381.586	.000
समूहों के मध्य	338.600	448	.756		
कुल	2934.236	457			

व्याख्या: यह व्याख्या की जाती है कि उच्च शिक्षा में पढ़ रहे छात्र-छात्राओं के सीखने पर ऑनलाइन शिक्षा का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है, क्योंकि, sig. <0.05 है|

परिकल्पना 3:

Ha3: उच्च शिक्षा में पढ़ रहे छात्र-छात्राओं की जागरूकता पर ऑनलाइन शिक्षा का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है

तालिका 12: परिकल्पना 3

ANOVA					
जागरूकता					
	वर्गों का योग	df	माध्य वर्ग	F	Sig.
समूहों के बीच	2440.191	9	271.132	490.373	.000
समूहों के मध्य	247.704	448	.553		
कुल	2687.895	457			

व्याख्या: यह व्याख्या की जाती है कि उच्च शिक्षा में पढ़ रहे छात्र-छात्राओं की जागरूकता पर ऑनलाइन शिक्षा का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है, क्योंकि, sig. <0.05 है|

परिकल्पना 4:

Ha4: उच्च शिक्षा में पढ़ रहे छात्र-छात्राओं के दृष्टिकोण पर ऑनलाइन शिक्षा का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है

तालिका 13: परिकल्पना 4

ANOVA					
दृष्टिकोण					
	वर्गों का योग	df	माध्य वर्ग	F	Sig.
समूहों के बीच	1762.523	9	195.836	60.818	.000
समूहों के मध्य	1442.571	448	3.220		
कुल	3205.094	457			

व्याख्या: यह व्याख्या की जाती है कि उच्च शिक्षा में पढ़ रहे छात्र-छात्राओं के दृष्टिकोण पर ऑनलाइन शिक्षा का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है, क्योंकि, sig. <0.05 है|

परिकल्पना 5:

Ha5: उच्च शिक्षा में पढ़ रहे छात्र-छात्राओं के अलगाव पर ऑनलाइन शिक्षा का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है

तालिका 14: परिकल्पना 5

ANOVA					
अलगाव					
	वर्गों का योग	df	माध्य वर्ग	F	Sig.
समूहों के बीच	2162.894	9	240.322	122.254	.000
समूहों के मध्य	880.661	448	1.966		
कुल	3043.555	457			

व्याख्या: यह व्याख्या की जाती है कि उच्च शिक्षा में पढ़ रहे छात्र-छात्राओं के अलगाव पर ऑनलाइन शिक्षा का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है, क्योंकि, sig. <0.05 है|

4 उपसम्हार और सुझाव

लॉकडाउन के दौरान, छात्रों ने मुख्य रूप से अपने भविष्य के पेशेवर कैरियर और अध्ययन के मुद्दों के बारे में चिंता जताई और मुख्य रूप से ऊब, चिंतित और निराश थे। उन्होंने अपने कुछ स्वच्छ व्यवहारों को भी बदल दिया जैसे कि नियमित रूप से मास्क पहनना और हाथ धोना, और दैनिक दिनचर्या की आदतें जैसे घर छोड़ना और हाथ मिलाना। जबकि अस्पतालों और विश्वविद्यालयों दोनों की भूमिका सकारात्मक प्रतीत होती है, सरकारें और बैंक महामारी के दौरान छात्रों की अपेक्षाओं पर खरे नहीं उतरे।

ऑनलाइन शिक्षा, छात्र-छात्राओं को अग्रिम पाठ्यक्रम लेने के लिए अत्यधिक प्रेरित करती है। ऑनलाइन शिक्षण का उपयोग सीखने को रोचक बनाता है। ऑनलाइन शिक्षा ने छात्रों को अपने शिक्षा को जारी रखने में मदद की है। इस शोध से पता चला है कि कटनी जिले में पढ़ने वाले छात्र कोविड-19 महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा से लाभान्वित हो रहे हैं। साथ ही, ऑनलाइन शिक्षा का उपयोग अब भी किया जा सकता है जब ऑफ़लाइन शिक्षा सफलतापूर्वक फिर से शुरू की गई है। ऑनलाइन शिक्षा को शिक्षण की एक स्थायी विधि के रूप में एकीकृत किया जाना चाहिए, खासकर उच्च शिक्षा के लिए।

4.1 सुझाव

इस अध्ययन से निकाले गए सुझाव निम्नलिखित हैं:

1. **शिक्षा तक बढ़ती पहुंच:** ऑनलाइन शिक्षा माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के लिए शैक्षिक अवसरों का विस्तार कर सकती है, विशेष रूप से उन लोगों के लिए जो वंचित क्षेत्रों में हैं या शारीरिक या तार्किक बाधाओं का सामना कर रहे हैं।
2. **लचीलापन और व्यक्तिगत शिक्षा:** ऑनलाइन शिक्षा शेड्यूलिंग और पेसिंग के मामले में लचीलापन प्रदान करती है। छात्र आवश्यकतानुसार सामग्री की समीक्षा करने के लिए अपनी गति से सीख सकते हैं और अन्य प्रतिबद्धताओं के आसपास अपने सीखने को फिट करने के लिए लचीलापन रखते हैं।
3. **उन्नत आत्म-अनुशासन और समय प्रबंधन:** ऑनलाइन शिक्षा के लिए छात्रों को अपने स्वयं के सीखने की जिम्मेदारी लेने की आवश्यकता होती है जो आत्म-अनुशासन और समय प्रबंधन जैसे आवश्यक कौशल विकसित कर सकते हैं।
4. **बढ़ी हुई जुड़ाव और अन्तरक्रियाशीलता:** ऑनलाइन शिक्षा में अक्सर मल्टीमीडिया सामग्री, शैक्षिक गेम और ऑनलाइन चर्चा जैसे इंटरैक्टिव तत्व शामिल होते हैं जो छात्र जुड़ाव को बढ़ा सकते हैं।
5. **एक विविध सीखने के माहौल तक पहुंच:** ऑनलाइन शिक्षा छात्रों को विभिन्न स्थानों और पृष्ठभूमि से साथियों और शिक्षकों के साथ बातचीत करने की अनुमति देती है। यह विचारों, दृष्टिकोणों और सांस्कृतिक अनुभवों के आदान-प्रदान की सुविधा प्रदान करता है, जो दुनिया की व्यापक समझ को बढ़ावा देता है।
6. **आत्म-विकसित सीखने के अवसर:** ऑनलाइन शिक्षा छात्रों को अपनी गति से सीखने में सक्षम बनाती है जो त्वरित शिक्षार्थियों और उन लोगों दोनों के लिए अवसर प्रदान करती है जिन्हें अवधारणाओं को समझने के लिए अतिरिक्त समय की आवश्यकता होती है।

संदर्भ

[1] वर्माअभिषेक, “मुख्य शिक्षा में ऑनलाइन शिक्षा की भूमिका,” 2022.

[2] W. Leal Filho *et al.*, "Impacts of COVID-19 and social isolation on academic staff and students at universities: a cross-sectional study," *BMC Public Health*, vol. 21, no. 1, pp. 1-19, 2021, doi: 10.1186/s12889-021-11040-z.

[3] शिवम श्रीवास्तव and वर्माअनीता, "कोविड 19 में सूचना एवं संचार तकनीकी का शैक्षिक योगदान का अध्ययन," *Sch. Res. J. Interdiscip. Stud.*, 2021.

[4] घोषसुप्रिया, "माध्यमिक स्कूल में ऑनलाइन शिक्षा की आवश्यकता और चुनौतियां," vol. 8, no. 5, pp. 878-882, 2021.

[5] अग्रवालनिधी and झा.बबीता, "उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षा के डिजीटलीकरण से विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन," vol. 9, no. 1, pp. 27-33, 2021.

[6] वर्माअर्चना, "कोविड का छात्रों पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव," vol. 10, no. 5, pp. 49-52, 2021, doi: 10.35629/7722-1005044952.

[7] गोस्वामीनवप्रभाकर लाल and सिंहश्रीमती सोनल, "उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता एवं समायोजन का शैक्षिक निष्पत्ति पर प्रभाव का अध्ययन," vol. 02, no. 01, pp. 204-208, 2020.

[8] कुण्डारासंतोष कुमार, "कोरोना काल में उच्च शिक्षा का बदलता परिदृश्य," vol. 03, no. 02, pp. 99-102, 2021.